प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 09 * MAY 2007 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	Voice - 46	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
2	Voice - 47	*40*				प्रकृति और पुरुष दो पदार्थ हैं पुरुष अनादि अनंत अकर्म है व प्रकृति अनादि सांत सकर्म है	
3	Voice - 48	32				आ० रा०-प्र०सर्ग-राम हृदय सीताजी द्वारा भगवान राम का नि० नि० स्वरूप निरूपण	
4	Voice - 49	*51*				भ०गीता - २/१६-२५ : माया ८ : अज्ञान की २ शक्तियाँ - आवरण और विक्षेप	8
5	Voice - 50	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
6	Voice - 51	32				सीताजी द्वारा भ०राम का नि-नि० स्वरूप निरूपण माया-अविद्या उपाधि से ई०-जीव विभाग	
7	Voice - 52	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
8	Voice - 53	*43*		कक्षासामग्री		भ०गीता - २/१६-१८ : सत्-असत् दो ही पदार्थ हैं जगत रज्जू में सर्प रूप भ्रम मात्र है	Imp
9	Voice - 54	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
10	Voice - 55	*41*				भ०गीता - २/१६-१७ : आत्मा अप्रमेय है प्रमाण के ६ प्रकार	Imp
11	Voice - 56	22				सीताजी द्वारा भ०राम का नि० नि० स्वरूप निरूपण	
12	Voice - 57	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
13	Voice - 58	58				भ०गीता - २/११-१८ : कर्म १ : अर्जुन तेरा शोक आत्म-अनात्म दोनों दृष्टि से व्यर्थ है	1
14	Voice - 59	32				भक्ति ३ : मुक्तिकोपनिषद : भ०राम का हनुमान जी को ज्ञान का उपदेश, जीव अविनाशी है	3
15	Voice - 60	35				कर्म २ : आत्मा अकर्ता है कर्म केवल प्रकृति में हैं, आत्मा द्रष्टा हैं व माया दृश्य हैं	2
16	Voice - 61	33				माण्डूक्य उ० की भूमिका : भ०राम हनुमान सम्वाद : ब्र०ज्ञान के लिये प्रस्थानत्रयं अनिवार्य	
17	Voice - 62	36				भ०गीता - २/२०, २१, २२, २३, २४ : व्याख्या एवं विवेचना	
18	Voice - 63	21				भ०गीता - २/२३, २४, २५ : ज्ञान काण्ड	ab
19	Voice - 64	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
20	Voice - 65	35				माण्डूक्य उ० - १	
21	Voice - 66	33				भ०गीता - २/२६-३० : ज्ञान काण्ड : देह जड़ माया हैं व देही अविनाशी सच्चि०रूप ही है	c
22	Voice - 67	33				माण्डूक्य उ० - २ : चारों भाईयों के माध्यम से ओंकार का स्वरूप निरूपण	
23	Voice - 68	37		अतिविशेष		भ०गीता - २/३० : ज्ञान काण्ड : सॉख्य योग : देह व देही दो ही पदार्थ हैं	d
24	Voice - 69	33				भक्ति ४ : आनंद रामायण-मनोहर काण्ड : श्री राम जय राम जय जय राम -मंत्र की महिमा	4
25	Voice - 70	44				भ०गीता - २/३० : ज्ञान काण्ड : देह व देही दो ही पदार्थ हैंण	e
26	Voice - 71	33				भक्ति ५ : राम नाम की व्याख्या : रकार मकार अकार - तत् त्वम असि - वह बह्म तू है	5
27	Voice - 72	44				भ०गीता - २/३० : ज्ञान काण्ड : देह व देही दो ही पदार्थ हैं	f
28	Voice - 73	36				दो बह्म हैं : परम बह्म एवं शब्द बह्म-कर्म उपासना ज्ञान- मायारूपी मेघ की निवृत्ति हेतु	